श्रम विभाग

श्रादेश ।

दिनांक 3 जुलाई, 1986

सं० ग्रो०वि०/रोहतक/7-86/22722.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० मैनेजिंग डाय रैक्टर, दी स्टेट को प्राप्नेटिव लैंग्ड डिनैटा मेंट बैंक ति०, सैंह्टर 22, वण्डोगई, (2) मैनेजर दो रोहाक प्राईनरी को प्रोप्नेटिव लैंग्ड डिनैट्नमैंट बैंक लिंग्, रोहतक, के श्रीमिक श्री कृष्ण कुमार, पुत्र निहाल सिंह, गांव व डा० खरड़-ग्रलिपुर, जिला हिसार तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इतके बाद जिखान मामने में कोई ग्रोबोणिक विवाद है;

स्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यसाल विवाद को न्यावित गैय हेनु तिविधः करना बांछनाय सनजते हैं ;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शित्तियों का प्रयोग करने हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 9641-1-अम-78/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970, के साथ गठित सरकारी अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित अन न्यायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिगिय एवं गंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री कृष्ण कुमार, पुत्र निहाल सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो बह किस राहत का हकदार है?

दिनांक 4 जुलाई, 1986

सं भो वि /हिसार/64-86/23080.— चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, (2) हैड पशु विभाग उत्पादन तकतीको कालिज आफ पशु विज्ञान, कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, के श्रामिक श्री बलवन्त सिंह मार्फत मजदूर एकता यूनियन, नागोरी गैंट, हिसार तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायणिय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, श्रव, श्रीद्योगिक विवाद श्रिविनियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं. 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी श्रिधिसूचना की घारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, की विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मान में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उनत प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उनत विवाद से सुसंगत श्रयका अम्बन्धित मामला है :—

वया को बलवन्त सिंह, की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं के श्रो विव / श्रम्बाला / 40-86 / 23087 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं के मैंने जिंग डायरैक्टर, हाऊ सिंग बोर्ड, हरियाणा, चण्डोगड़, (2) कार्य कारो श्रि श्रम्यन्ता, कान्सट्रकान डिनिजन, हाऊ सिंग बोर्ड, हरियाणा, चण्डोगड़, के श्रमिक श्री श्रम्यों के सुन क्षा क्षा कुमार, पुत श्री दीवान चण्ड, मार्फत मकान नं 2796, सैक्टर 15, पंचकूला, (श्रम्बाला) तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्री शोकोंगिक निवाद है;

भ्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछतीय समझते हैं;

इसलिये, अब, अौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा अदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरिया गा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सक 3 (44) 84-3-अम दिनांक 18 अप्रैल, 1985, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अव गायालय, अम्बाला को विवादअस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देले हेतू निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त अबन्धकों तथा अभिक के बीच या तो विवादअस्त मामला है या विवाद से सुसँगत अथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री ग्रशोक कुमार, की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?